International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

प्रभा खेतान के गध्य साहित्य में स्त्री विमर्श : एक राजनैतिक द्रष्टिकोण

डॉ रंजना सी धोलकिया

आसी.प्रोफेसर, राजनीतिशास्त्र विभाग, समाजविधा भवन, गुजरात यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद

सारांश :

हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श जिसमें नारी जीवन की अनेक समस्याएँ देखने को मिलता है। हिन्दी साहित्य में छायावाद काल से स्त्री विमर्श का जन्म माना जाता है। प्रेमचंद से लेकर आज तक अनेक पुरुष लेखकों ने स्त्री समस्या को अपना विषय बनाया लेकिन उस रूप में नहीं लिखा जिस रूप में स्वयं महिला लेखिकाओने लिखी है । अतः स्त्री विमर्श की शुरुआती गूंज पश्चिम में देखनेको मिला। सान 1960 ई के आसपास नारी सशक्तिकरण ज़ोर पकड़ी जिसमें चार नाम चर्चित है । उषा प्रियम्वदा , कृषणा सोबती , मन्नू भण्डारी एवं शिवानी आदि लेखिका ओं ने नारी मन की अन्तद्रवन्दवों एवं आप बीती घटनाओं को उकरेना शुरू किए और स्त्री विमर्शएक जवलंत मुद्दा है। आठवें दसक आते आते यही विषय एक आंदोलन का रूप ले लिया जो शुरुआती स्त्री विमर्श से ज्यादा सिध्ध हुआ । आज मैत्रेयी पुष्पा तक आते आते महिला लेखिकाओं की बाढ़ सी आ गयी स्त्रीवादी सिध्द्धांतोंका उदेश्य लैंगिक असमानता की प्रकृति एवं कारणो को समझना तथा इसके फल स्वरूप पैदा होनेवाले लैंगिक भेदभाव की राजनीति और शक्ति संतुलन के सिध्द्धांतों पर इसके असर की व्याखया करना है । स्त्री विमर्श संबंधी राजनैतिक प्रचारों का ज़ोर प्रजना संबंधी अधिकार, घरेलू हिंसा ,मातृत्व अवकाश , समान वेतन संबंधी अधिकार , यौन उत्पीड़न, भेदभाव एवं यौन हिंसा पर रहता है । प्रभा खेतान लिखती है की " ज़्यादातर लेखिकाएँ आलोकना की आपाधापी में पीछे छूट गई है। स्त्री की अपनी संस्कृति है , इतिहास में इसे भिन्न माना जाता रहा लेकिन उसे अलग पहचान नहीं दी गई । चूंकि अलग से स्त्री शक्ति की सत्ता नहीं थी इसलिए सत्ता को अलग पहचान नहीं मिली। " संविधान प्रदत स्त्री - पुरुष समानता के बावजूद स्त्री को इंसाफ नहीं मिलता । न्याय के पैरोकार स्त्री की सुरक्षा करनेकी जगह खिलवाड़ करते आए हैं। पुलिस भी समाज में इंसाफ के बदले अन्याय ही करते आए हैं। इसी सच्चाई को प्रभा खेतान ने अपने उपन्यासों में उभारने का प्रयास किया हैं ।

मूखय शब्दों : स्त्री विमर्श , असमानता , स्त्रीवाद , अधिकार

"उठो
मेरे साथ
मेरी बहन !
छोड़ दो,
किसी और से मिली मुक्ति का मोह !
तोड़ दो, शापग्रस्तता की कारा
तुम अपना उत्तर स्वयं हो अहल्या !
ग्रहण करो
वरण की स्वतन्त्रता " 1
- प्रभा खेतान

प्रस्तावना

रेबेका लेविन का मानना है कि " Feminism is a theory that call for woman's attainment of social economic and political rights and equal to those possessed by men" कहने का आशय है कि जिस तरह पुरुष सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्रमें अधिकार प्राप्त करते है वैसे ही स्त्री भी उन सभी अधिकारों के लिए समान रूप से अधिकारी है । 2

प्राचीन समयमे मातृ सत्ताक व्यवस्था थी । तब स्त्री सत्ताके केंद्रीय स्थान में और पूर्णतः स्वतंत्र और सम्मानीय थी । पर स्त्री सम्पन्न होने के साथ साथ वह उर्वरा भी थी। उसकी वह प्रजनन क्षमता ही उसकी दासता का मूल कारण बन गया । स्त्रीकी भूमिका हर हमेंश सर्जक और पोशककी ही रही है । प्रकृति के समान उर्वरा स्त्री के सामने पुरुष खुदको असहाय एवं लाचार पाता है । सीमोन लिखती है " वह चाहे धरती थी , चाहे माता, चाहे देवी, किन्तु पुरुष की संगी मित्र कभी नहीं थी । उनमें पारस्परिक साझेदारीका भाव नहीं था।" 3

पश्चिमी दार्शनिक प्लेटो ने तो गुलामो , वहशियो और स्त्रियॉ को दार्शनिक विमर्श और बौद्धिक चिंतन से कोसों दूर रखने की बात कही थी । इस संदर्भ में पौराणिक ऋषि याज्ञवल्क्य और विदूसी गार्गी की कहानी याद आती हैं जिसमें गार्गी से शास्त्रार्थ में खुद को पराजित होते देख याज्ञवल्क्य कहते हैं - चुप हो जा स्त्री , नहीं तो तेरा सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा, " यह प्राचीन कथा एक प्रतीक हैं , उस औरत का जिसका अस्तित्व ही उसके मस्तक के नीचे से शुरू माना जाता हैं । वह मस्तक विहीन देह मात्र देह हैं । " 4 इस भेद को केवल स्त्री पुरुष के प्राकृतिक भेद के आधार पर नहीं स्वीकारा जा सकता । निश्चय ही यह मनुष्य मनुष्य में किया गया सामाजिक भेदभाव है नारिका

मानवी के रूप में अस्वीकार हैं । 5 हालांकि अब स्त्रीने अपनी चुप्पी तोड़कर बरसों से दबे आक्रोशको साहित्य जगतके माध्यम से शब्दबद्ध किया । पितृसत्ता के कारण किए गए साजिशॉ का पर्दाफास किया ।

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में स्त्रीवादी विचारको पनपनेका सुअवसर मिला। भूमंडलीकरण ने अपने तमाम अच्छाईयों एवं बुराइयों के साथ सभी वर्ग के शिक्षित स्त्रियो को घर से बाहर निकलनेका अवसर दिया । परिणाम स्वरूप स्त्री अपने वर्जित क्षेत्रो में ठोस दावेदारी की ओर स्वावलंबन के दिशामे तीव्र प्रयास भी सामने आए ।

अब स्थिति कुछ बदली हुई नजर आती है । क्योंकि छठे शताब्दी के पहले तक सिर्फ लेखको का अधिकार था, महिला लेखक को काउच लेखक कहकर हंसी उयडाया जाता था । परंतु अब स्त्री विमर्श का डंका इसलिए बज रहा है क्योंकि आठवें दशक तक आते आते महिला लेखिला ओंकी बाढ़ सी आ गयी । उसके बाद भी प्रसिध्ध लेखिका सीमोन द बोउआर के उक्त कथन महिला समाज में परिलक्षित होती है - " स्त्री की स्थिति अधीनता की है। स्त्री सदियों से ठगी गई है और यदि उसने कोई स्वतन्त्रता हांसील की है तो बस उतनी ही जितनी पुरुष ने अपनी सुविधा के लिए उसे देना चाही। यह त्रासदी उस आधे भाग की है, जिसे आधी आबादी कहा जाता है। " 6

स्त्री विमर्श अवधारणा

स्त्री विमर्श उस साहित्य आंदोलन को कहा जाता है जिसमें स्त्री अस्मिता को केंद्र में रखकर संगठित रूप से स्त्री साहित्य की रचना की गई है । हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श अन्य अस्मितामूलक विमर्शों की भांति ही मुख्य विमर्श रहा है। जो की लिंग विमर्श पर आधारित है । स्त्री विमर्श साहित्य मे "विमर्श" 60 से 70 के दसक के आस पास आता है , पश्चिमी देशो में वह स्त्रीवादी आंदोलन के रूप में उसका उद भव हो चुका था । स्त्रीवाद अंग्रेजीके फ़ैमिनिज़्म शब्द का पर्याय है। फ़ैमिनिज़्म फ्रेंच शब्द फेमी अर्थात सामाजिक आंदोलन और इज्म राजनैतिक विचारधारा के मिलने से बना है । इसका प्रयोग सबसे पहले ई 1880 में फ्रांस, 1890 में ब्रिटेन और 1910 में संयुक्त राज्य अमेरिका में हुआ था । 7

स्त्री विमर्शकी सबसे बड़ी ताकत यह है की यह प्रतिशोध से पीड़ित नहीं, उसका विरोध पुरुष से नहीं अपितु पितृसत्ताक व्यवस्थासे हे। स्त्री विमर्श उत्तर आधुनिकताकी धुरी पर खड़ा एक सशक्त साहित्यिक विमर्श है। स्त्री विमर्श केवल स्त्रीकी मुक्ति या पुरुषकी बराबरीका आख्यान नहीं है, बल्कि अत्यंत गहन अर्थवाला यह शब्द नारी मुक्तिके साथ साथ नारीकी अस्मिता, चेतना, व स्वभाव को भी अपनेमें समेट लेता है ।

ऐस्टेल फ्रड्मेन Estelle Freedman ने अपनी पुस्तक "Feminism, sexuality and politics"में यह कहा है कि " I use feminism as an umbrella term for any movement seeking to achieve full economic and political citizenship for woman." इससे यह स्पष्ट होता है कि स्त्री के नागरिक अधिकारो के लिए होने वाले समस्त आर्थिक एवं राजकीय आंदोलन स्त्री विमर्श के अंतगर्त समाहित है । 8
चंद्रकांता के शब्दोमें " स्त्री विमर्श को बृहत्तर अर्थो में परिभाषित करना चाहे तो वह घर परिवार, समाज , समाज नीति और राष्ट्र नीति में ,नारीकी अस्मिता , अधिकार और उन अधिकारो के लिए संघर्ष चेतना से जुड़े संवादकी संकल्पना है । " 9

प्रभा खेतान के गद्य साहित्य में स्त्री विमर्श : एक राजनैतिक द्रष्टिकोण

स्त्री विमर्श एक प्रतिक्रिया है । युगों कि दासता ,पीड़ा और अपमान के विरूध्ध स्त्री की सकारात्मक प्रतिक्रिया है अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व कि रक्षा हेतु । 1949 में सिमोन द बुआ ने अपनी पुस्तक " द सेकंड सेक्स " में स्त्री को वस्तु के रूपमें प्रस्तुत करनेकी स्थिति पर प्रहार किया। डोरोथी पार्कर का मानना है की स्त्री को स्त्री के रूप में ही देखना होगा क्योंकी पुरुष और स्त्री दोनों ही मानव प्राणी है। 1960 में केट मिलेट ने पुरुष की रूढ़िवादी मानसिकता पर प्रहार किया । वर्जिनिया वुल्फ़ , जर्मेन ग्रीयर आदि ने स्त्री के अधिकारों की बात की । इन स्त्रीवादी चिंतको का प्रभाव भारतीय समाज पर भी पड़ा भारतीय चिंतकों में वृंदा करात , प्रभा खेतान , मैत्रेयी पुष्पा , महाश्वेता देवी, मेघा पाटकर , अरुंधति राय, वोल्गा, अब्बूरी छायादेवी , जया प्रभा आदि उल्लेखनीय है।10

आंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लिंग के भेदभाव को दूर करने के संधर्भ मेँ सभी राष्ट्रो के सविधानों मेँ यह स्पष्ट उल्लेख हें की लिंग के भेदभाव को हटाकर सभी मनुष्यो को समान अधिकार व वैधानिक सुरक्षा दी जायेगी । भारतीय संविधान के भाग-3 के मूलभूत अधिकार अंतर्गत कई मुख्य अनुच्छेद निम्न दर्शित है -अनुच्छेद-14 कायदा के समक्ष समानता और कानून द्वारा समान सरंक्षण , अनुच्छेद -15 धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्म स्थान के भेदभावका निषेध, अनुच्छेद-19 के तहत सभी अधिकारों, अनुच्छेद-23 के तहत शोषण विरुद्ध अधिकार, अनुच्छेद -32 तहत संवैधानिक उपचारका अधिकार दिया गया है । 11

हिन्दी साहित्य जगत में प्रसिध्ध लेखिका लब्ध प्रतिष्ठित प्रभा खेतान ने अपनी स्त्रीवादी अवधारणा अपनी एक अलग एवं स्वतंत्र पहचान बनाई है । उनकी आत्मकथा ओर उपन्यास में स्त्री स्वतन्त्रता , स्त्रीसंघर्ष, सहनशीलता, स्त्री सशक्ति करण स्त्री अस्मिताको उजागर किया है। भारतीय संविधान के आमुख में आलेखित सामाजिक आर्थिक एवं राजकीय न्याय ,विचार अभिवयक्तिकी स्वतन्त्रता, दरज्जा ओर तक की समानता का उल्लेख किया गया है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद -51-अ (6) तहत प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है की महिलाओं को हिन बताना और उनके गौरव को क्षति

हो सके ऐसे व्यवहार का त्याग करना होगा। 12 वह कर्तव्य का अमलिकरण भारतीय पितृसत्तात्मक समाज संविधान की रचनाके सात दसक के बाद भी सही मायने में नहीं कर पाया , जिसका चितार लेखिकाने अपने गध्य अंशोमें आलेखीत किया है । स्त्री स्वतंत्रता, समानता ओर न्याय को पानेके अविरत प्रयास में आज भी वह असफल, असहाय है पितृसत्तात्मक समाज के दोहरे मूल्यों एवं मान्यताएँको वह तोड़ नहीं पाई। तो दूसरी ओर अपनी आत्मकथामें स्वतन्त्रताके लिए, संघर्ष करने वाली आधुनिक नारी को भी प्रदशित किया है ।

जनताको इंसाफ दिलाना कानूनका फर्ज है । जनता अपना अधिकारके लिए कानून का दरवाजा खटखटाती है । संविधान प्रदत स्त्री - पुरुष समानता के बावजूद स्त्री को इंसाफ नहीं मिलता । न्याय के पैरोकार स्त्री के साथ खिलवाड़ ही कराते आए हैं। 13 व्यवस्था एवं कानून का गठबंधन स्त्री को अपाहिज बनाए रखने में ही अपना इतिश्री मानता रहा है । पुलिस भी समाज में इंसाफ के बदले अन्याय ही करते आए हें। इसी सच्चाई को प्रभा खेतान ने अपने उपन्यासों में उभारने का प्रयास किया हैं ।

“पीली आँधी” में एक गरीब स्त्री की इज्जत लूट ली अति हें । उसका ससुर ठाने में जाकर थानेदार से इंसाफ की मांग करता हें लेकिन पुलिस द्वारा उसकी बात अनसुनी कर की जाती हें -‘ पास के गाँव से खबर आई -कोई धाड़ैती मंदिर से लौटती हुई वाणिये की लुगाई को उठाकर ले गया। ए बिणनी में सांची बात कह रही हूँ....वह धाड़ैती नहीं था, ठाकुर का बेटा था.... गाँव देखता का देखता रह गया । बूढ़ा ससुर, अंग्रेज़ हाकिम के सामने बहुत गीदगिड़ाया,बहुत रोया ...” मालिक मेरा बेटा परदेश में हें ।में बेटेको क्या मुंह दिखाऊँगा ? लेकिन कौन सुने? गरीबकी पुकार इन लोगो के पास कभी पहुँचती है क्या? न्याय है कहाँ ? 14

ऐसी ही घटना का जिक्र “स्त्री पक्ष” उपन्यास में किया गया हें जहां सब अन्याय के आगे चुप्पी साधे रहते है । वृंदा सोचती है -“उस दिन अखबार में बलात्कार की वह घटना छपी थी किसी कॉलेज की छात्रा के साथ हास्टल के लड़कों ने बलात्कार किया था और इन लड़कों में शहर के नामी गिरामी व्यक्तियों के बेटे शामिल थे। लड़की रोटी रही थी और अपने बाप से कहती रही थी की ऐसा एक बार नहीं कई बार घटा था, मगर अब तक भय से वह बोल नहीं पाई थी, और आज मजबूर होकर उसको कहना पड़ा था की उससे यह यंत्रणा और अत्याचार अब और नहीं सहा जाता । बहदवास बाप ने पुलिस स्टेशन में एफ आई आर दर्ज करवाना चाहा था, मगर पुलिस ने मना करा दिया था। कारण पुलिस ऊपर मंत्री जी का दबाव था। “ 15 उस लड़की को न्याय नहीं मिला क्योंकि मुजरिम ऊंची पकड़ रखने वाले थे । पुलिसने भी इन्ही का साथ दिया इस प्रकार कानून के रहवाले ही अन्याय का साथ दे रहे है ।

पुरुष हित में खड़ा कानून वास्तव में उसकी सत्ता को मजबूत है । स्त्री को अपने ही बच्चेके अहीकर से वंचित करता आया हें । कानून की नजर में पिता ही बच्चे का प्राकृतिक संरक्षक है । पिता के रहते यह कानून यह अधिकार माँ को नहीं देता। इसी का उदघाटन ' अपने अपने चेहरे ' और " छिन्नमस्ता " उपन्यासों में हुआ है । अपने अपने चेहरे की रितु अपने पति का घर छोड़ अपने घर लौट आती है । वह चाहती है की उसका बेटा उसके साथ रहे । तब उसके पिता के दोस्त वकील अंकल रितु को समझाते हुए कहते हैं - कानून तुम्हें बच्चे की कस्टडी नहीं देगा । " 16 उसी प्रकार छिन्नमस्ता में पति के कहने का विरोध करती हुई जब प्रिया व्यवसाय के लिए लंदन आने लगती हे तब नरेंद्र उसे धमकी देता है । घर वापस लौट कर न आने के लिए कहता हे , " हाँ , यह घर मेरा हे , और सुनो, संजु भी मेरा हे । कानून की नज़र में बेटे की कस्टडी बाप को मिलती है ।" 17 नरेंद्र भी इसी सच्चाई को उदधटित करता है की जन्म देने पर भी समाज में बेटे पर पहला हक पिता का ही होता है ।

तमाम कानून पुरुष की सहूलियत के लिए ही बनाई गए हैं । ' अपने अपने चेहरे 'में घर लौट आई रितु अपना बच्चा पाना चाहती हें । इस के लिए वह कानून का दरवाजा खटखटाना चाहती हें । तब रामा रितु को समझाते हुए कहती हें " और सजा देनेवाला पुरुष ? तुम्हारे हक में लड़नेवाला पुरुष ? उस " दूसरी औरत " के में भी कोई पुरुष ही लड़ेगा। तुम इन पुरुषों से पार पाओगी ? इसी पुरुसने तलाक का भी कानून बनाया । वह जानता है की एक पत्नीत्व पर आधारित विवाह की संस्था में टूटन आ ही सकती है ; बल्कि वह संस्था आज हर जगह टूट रही है । " 18 स्त्री द्वारा न्याय के लिए गुहार लगाना व्यर्थ है । स्त्री पुरुष समानता की बाते मात्र ढकोसला है । इसी सच्चाई को उघाड़ते हुए ' अपने अपने चेहरे 'की रमा सोचती है -" न्याय है ही कहाँ ? स्त्री पुरुष में समानता हैं कहाँ ? एक सत्ता की कुर्सी पर बैठा हुआ अपने औरे सामर्थ्य के साथ , दूसरा आँचल पसारे न्याय की भीख मांगती हुई, उसके चरणों में झुकी हुई । " 19

इंसाफ के रखवाले ही भक्षक बनकर स्त्री के विपक्ष में खड़े है । व्यवस्था का पुख्ता करने में कानून की भूमिका को दर्शाने का कार्य प्रभा खेतान अपने उपन्यासों के जरिए किया है।

हिन्दी प्रसिध्ध लेखिका प्रभा खेतान का साहित्य स्त्री जीवन के संघर्ष पर आधारित है पुरुष प्रधान संस्कृति , रूढ़ि परंपरा को तोड़कर स्वतन्त्रताके लिए संघर्ष करने वाली आधुनिक नारी का अंकन उनहोंने अपनी आत्मकथा " अन्या से अनन्या " में बड़े ही सशक्त ढंग से किया है । लेखिका कहेती है की "यह समाज कई कई मुक़ामो पर औरत को उसकी पंगुता महेसूस करवाता है औरतों के लिए सिर्फ प्यार काफी नहीं, व्यक्ति बनाने के लिए उसे और भी बहुत कुछ चाहिए,धन, मान ,अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता सभी कुछ । " 20 उनका स्त्री विमर्श केवल पुरुष विरोधी न होकर नारी को मानसिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर समानाधिकार की मांग करने वाला है ।

उपसंहार:

हिन्दी भाषा की उपन्यासकर, कवयित्रि तथा स्त्रीवादी चिंतक प्रभा खेतान ने पितृ सत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था के बीच स्वतन्त्रता, समानता के अधिकार एवं न्याय के लिए संघर्षरत विविध चरित्रों अपने गध्य अंशोमे रु -ब -रु चरितार्थ किया है । चन्द्रकान्ता के शब्दोमें -" लेकिन जिन शिद्दत से महिला रचनाकारों ने स्त्री के पारिवारिक सामाजिक और दैहिक शोषण को संवेदी स्वर और आक्रोश तेवर दिये है , दोयम दर्ज की स्थिति को नकारकर शोषण धर्मिता के विरूध्ध आवज़ बुलंद की है वह जहां स्त्री मानसकी अनकही पीड़ा का महा आख्यान है, वहीं उसकी संघर्ष चेतना और स्त्री विरोधी व्यवस्था से रु -ब-रु होकर , अपनी लड़ाई आप लड़ने की सामर्थ्य का सशक्त दस्तावेज़ भी है । "21

संदर्भ सूची

1. 'अहल्या' प्रभा खेतान सरस्वती विहार , दिल्ली संस्कारण 1988
2. saagarika.blogspost.com
3. प्रभा खेतान - स्त्री उपेक्षिता पृ 54
4. डॉ ज्योति किरण - हिन्दी उपन्यास और स्त्री जीवन पृ 16 (पुस्तक 12
5. अशारानी व्होरा- " औरत : कल, आज और कल " पृ 187) (पुस्तक 12)
6. आजकल :मार्च 2013- पृष्ठ 24
7. भावना मासिवाल-" स्त्री विमर्श का स्वरूप "- 'अपनी माटी' मासिक ई पत्रिका अगस्त 2016
8. Estelle Freedman- "Feminism, sexuality and politics" page no - 210
9. चन्द्रकान्ता स्त्री विमर्श की अवधारणा और हिन्दी साहित्य पृ 17 (पुस्तक 13-
10. saagarika.blogspost.com
11. "महिलाओं के अधिकारो"- श्री योगक्षेम मानव गौरव संस्थान , अहमदाबाद पृ. नं. 6
12. एजन पृ. नं. 8
13. अरविंद जैन - उत्तराधिकार बनाम पुत्राधिकार पृ 69
14. प्रभा खेतान - "पीली आँधी" ,राजकमल प्रकाशन प्रा लि,नयी दिल्ली पृ- 16
15. प्रभा खेतान - स्त्री पक्ष पृ 22
16. प्रभा खेतान ' अपने अपने चेहरे '-पृ-177
17. प्रभा खेतान " छिन्नमस्ता " पृ-13
18. प्रभा खेतान ' अपने अपने चेहरे '-पृ-125
19. वही पृ 93
20. प्रभा खेतान- " अन्या से अनन्या " पृ 257-258

21. चन्द्रकान्ता - " स्त्री विमर्श की अवधारणाऔर हिन्दी साहित्य" पृ -17